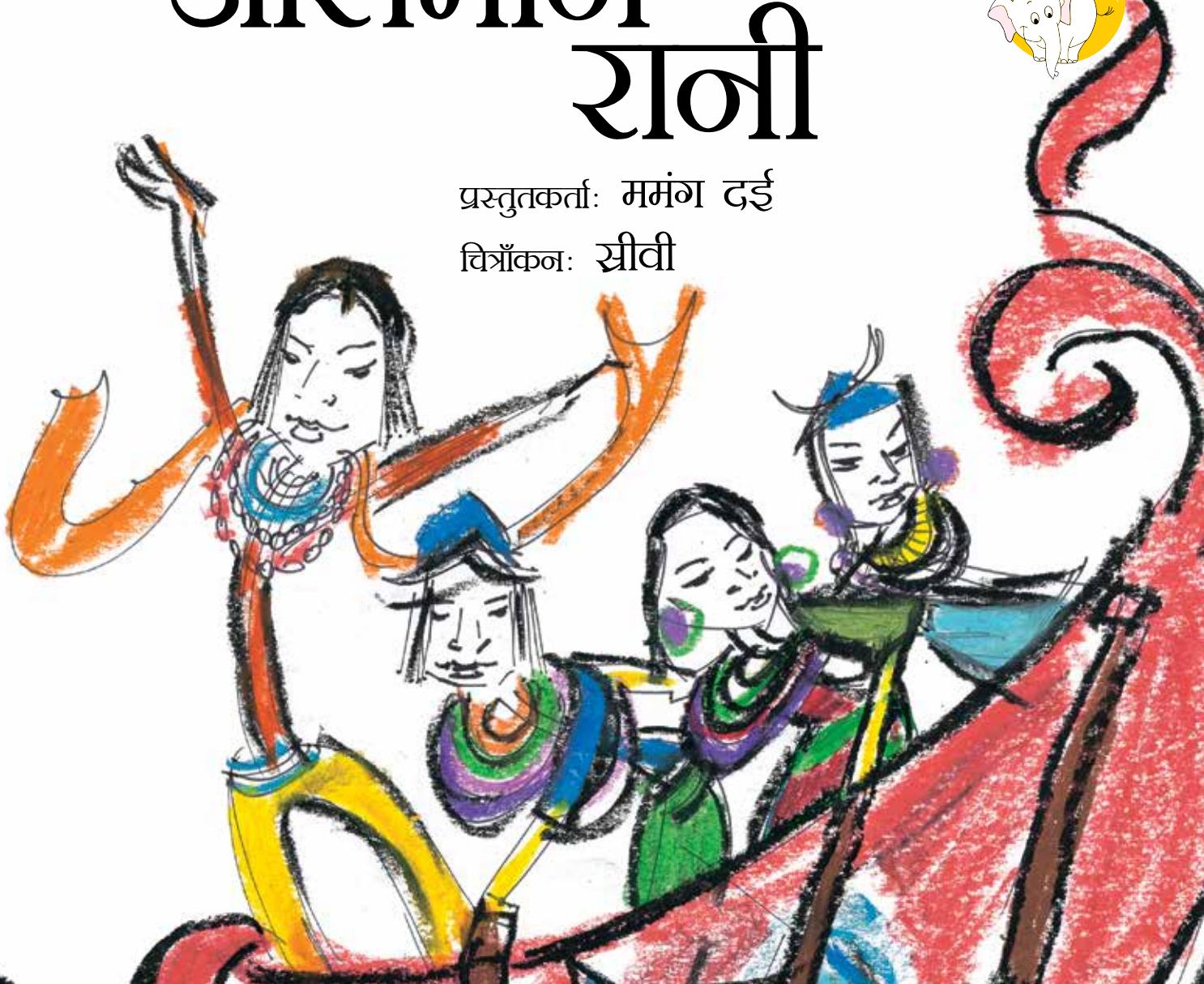


# 300 की रानी



प्रस्तुतकर्ता: ममंग दई

चित्रांकन: स्रीवी



## अध्यार १

जब धरती पर जीवन शुरू हुआ उस समय  
सिफ़ अनन्त नीला रंग फैला हुआ था ।  
तब कोजुम-कोजा नामक एक सभ्यता का  
जन्म हुआ ।





कोजुम-कोजा लोग बहुत  
खुश थे क्योंकि हर किसी  
को खाना काफ़ी अधिक  
मात्रा में मिल जाता था ।

उनके बहुत से उत्सव थे  
और वे हर उत्सव के शुरू  
होने से पहले शिकार करने  
या मछली पकड़ने जाते थे ।



लेकिन एक दिन कोजुम-कोजा पर एक बहुत  
बड़ी मुसीबत आ गई।

'पि-मे' का उत्सव था। हमेशा की तरह  
कोजुम-कोजा मछली पकड़ने गए।

अचानक उन्हें एक बड़ा-सा मछली जैसा प्राणी  
एक जाल में फँसा मिला।

उछलते-कूदते वे उसे गाँव लेकर आ गए।

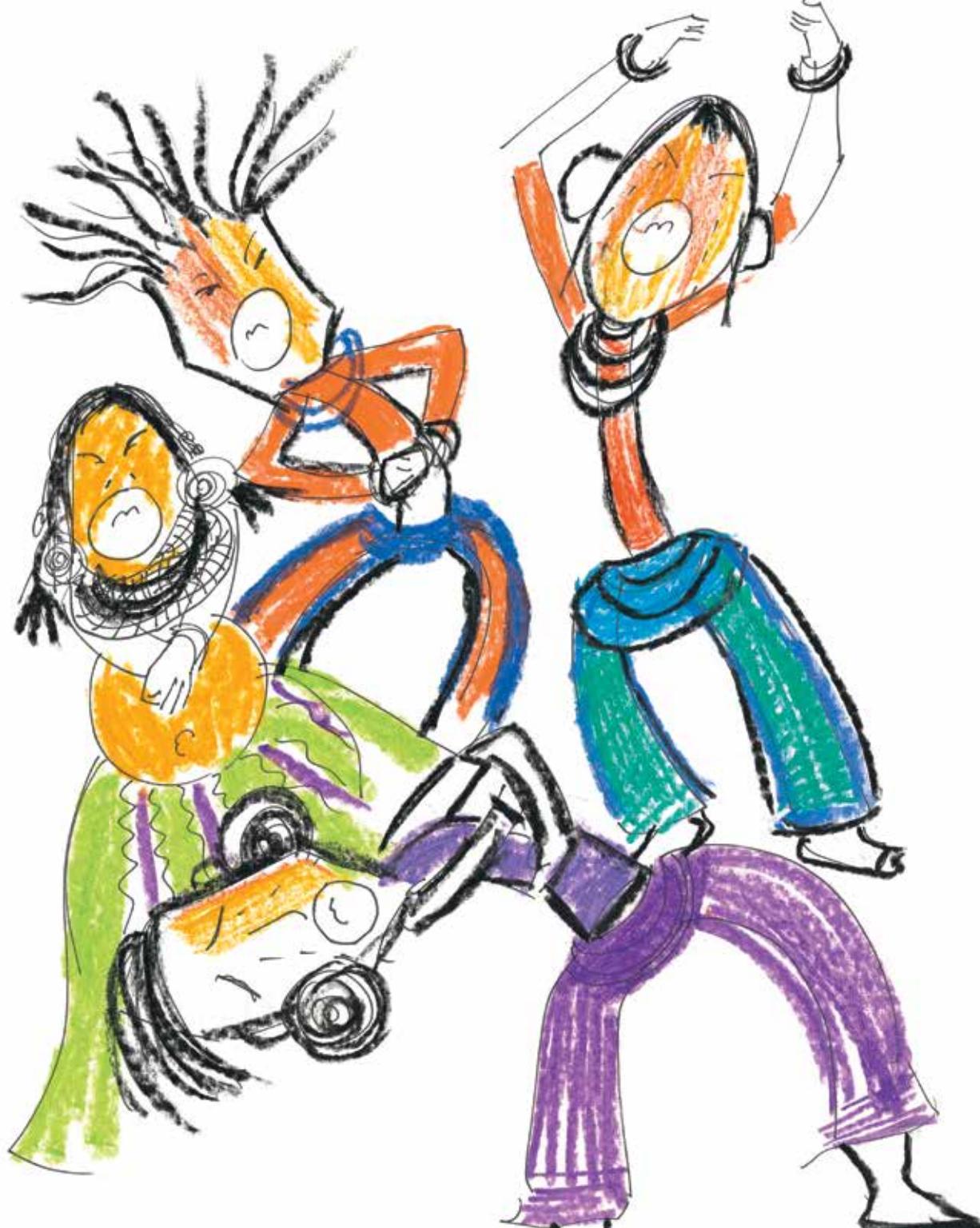




“देखो! देखो!” उन्होंने बड़ों से कहा।

“देखो हमने क्या पकड़ा है!”

बड़ों ने एक नज़र उस विशाल प्राणी पर डाली और बोले “यह तो ‘बिरी-बोटे’ का बेटा ‘बिरी आँउर पोटुंग’ है।”

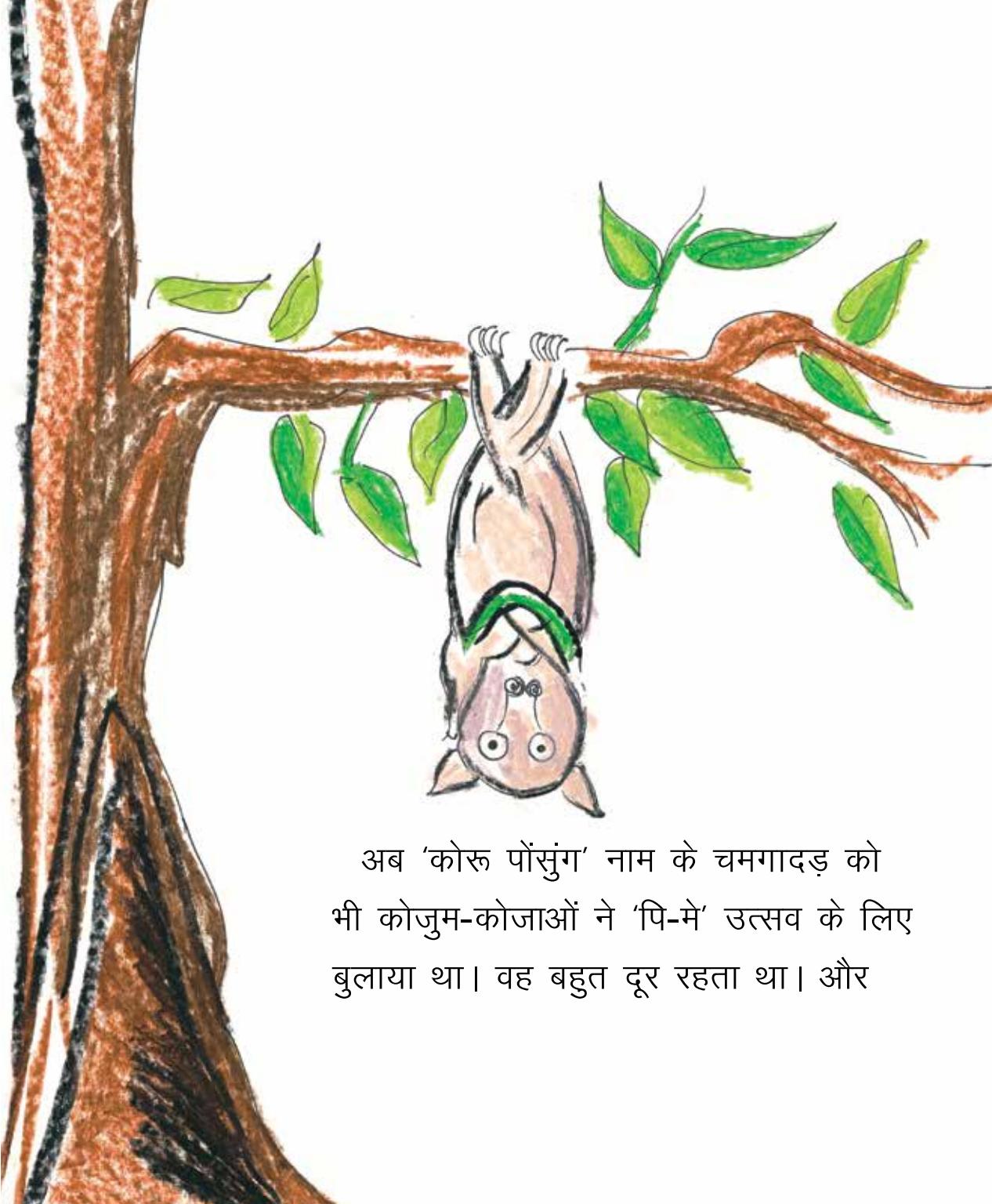


सबको पता था कि 'बिरी-बोटे' कौन था। वह सिली-सिडोंग नामक एक पानी के साम्राज्य का ताकतवर और बलशाली राजा था।

लेकिन नन्हे कोजुम-कोजाओं ने फिर भी बिरी आँउर-पोटुंग को खा कर खत्म कर दिया।

अभी उन्होंने उसे खाना खत्म किया ही था कि वे बीमार पड़ गए।





अब 'कोरु पोंसुंग' नाम के चमगादड़ को  
भी कोजुम-कोजाओं ने 'पि-मे' उत्सव के लिए  
बुलाया था। वह बहुत दूर रहता था। और



'कोरु पोंसुंग' बाबू ने सब कुछ देखा था कि क्या-क्या हुआ।  
आखिर जब उत्सव खत्म हुआ कोरु पोंसुंग बाबू ने  
कोजुम-कोजाओं से विदा ली और अपने देश को उड़ चला।  
वह उड़ता ही गया उड़ता ही गया। जब उसने नीचे की  
ओर सिली-सिडोंग को देखा तो उसने वहीं पर आराम करने  
की सोची। क्योंकि वह बहुत थक गया था।



लेकिन जब वह पानी के साम्राज्य के ऊपर पहुँचा। कोर्स पोंसुंग बाबू ने देखा कि रानी बहुत ही उदास थी। "मेरा प्यारा बेटा! मेरा प्यारा बेटा बिरी आँउर पोटुंग!" वह बार-बार यही कह कर सुबक-सुबक कर रो रही थी।

बिरी आँउर पोटुंग खो गया था और किसी को भी नहीं पता था कि वह कहाँ गया। अब कोर्स पोंसुंग क्या करता! उसे रानी को बताना ही पड़ा कि कोजुम-कोजा ने 'पि-मे' उत्सव पर उसके पुत्र को मार कर खा लिया था।



यह खबर पानी के साम्राज्य  
सिली-सिडोंग की गहराई तक  
एक आग की तरह फैल गई।  
राज्य में सब दुखी थे। फिर  
गुस्सा होकर उन्होंने निश्चय  
किया कि कोजुम—कोजा से  
युद्ध करना चाहिए।

सिली-सिडोंग का  
राजा 'बिरी-बोटे' ने अपने  
सेनापतियों बिरी—बिक लादांग  
लायो पुमु—सेये और दोंगुम  
दोलोम को बुलाया।

"अपनी सेना तैयार करो!" वह बोला,  
"हम लोग कोजुम-कोजा लोगों से  
युद्ध करने जा रहे हैं।"

और इसलिए नुकीले भालों और  
सनसनाती तलवारों से युक्त बिरी-  
बोटे की सेना कोजुम-कोजा की  
ज़मीन की ओर चल पड़ी। वे अपना  
गुस्सा निकालने के लिए लहरों की  
तरह आगे बढ़ने लगी।



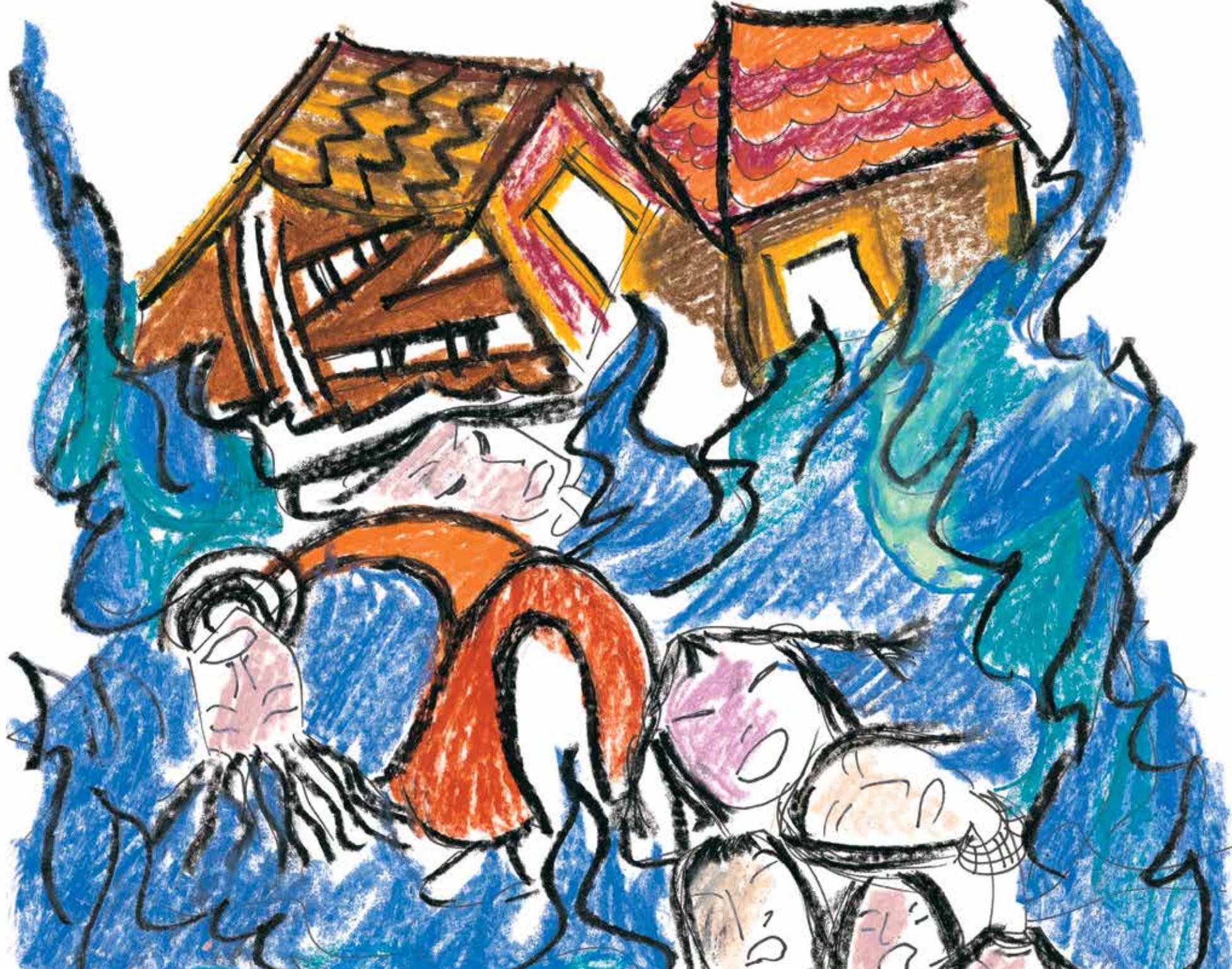
कोजुम-कोजा के लोग बहुत बहादुरी  
से कई दिनों तक खुद को बचाते रहे।  
परन्तु बिरी-बोटे की सेना ने तूफ़ान और  
मूसलाधार वर्षा से कोजुम—कोजा पर  
हमला कर दिया।

आँधी-तूफ़ान और बाढ़ से चारों ओर  
पानी—पानी हो गया।

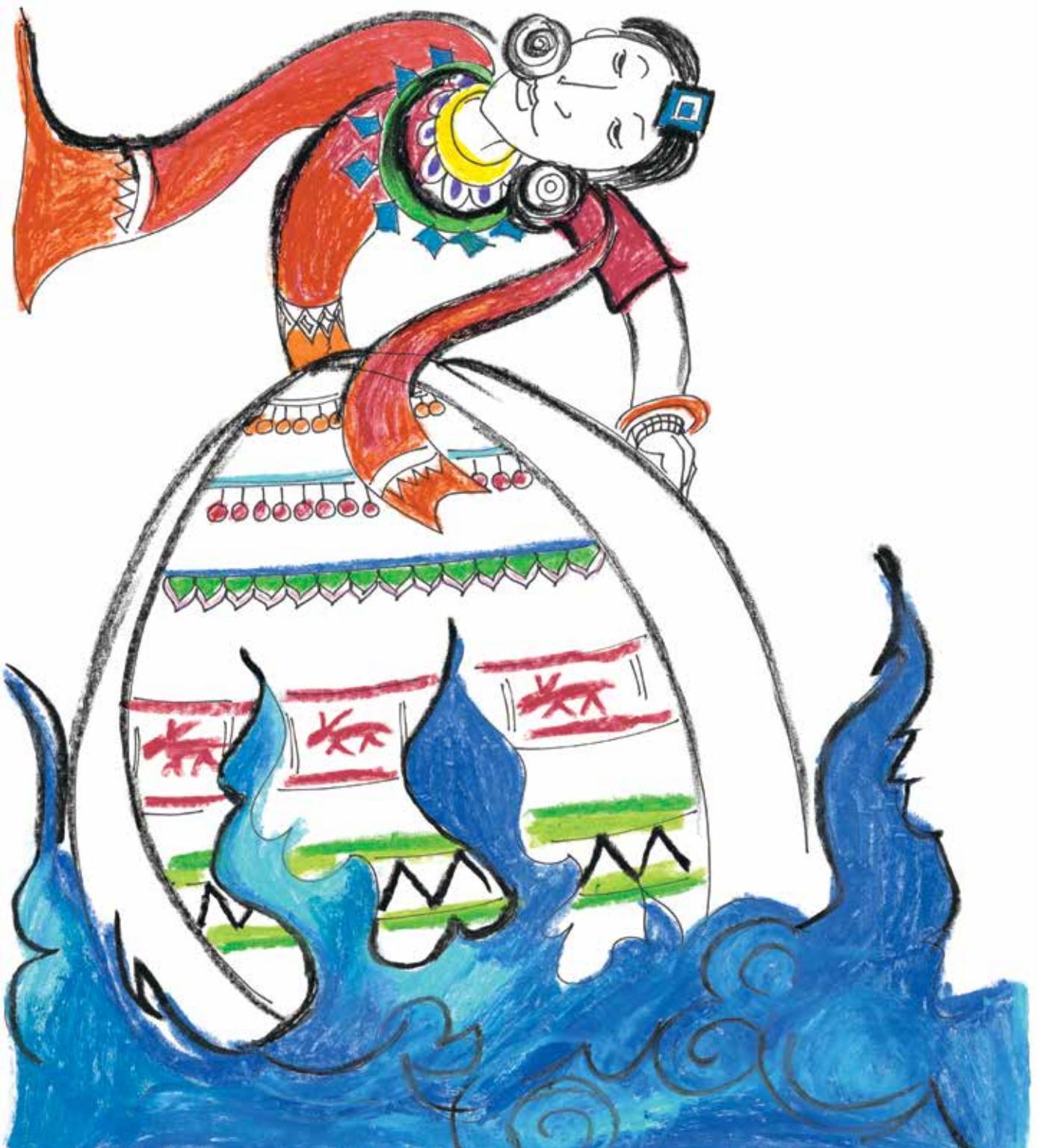
काफी दिनों के बाद ‘पानी की सेना’  
ने कोजुम-कोजा की भूमि को पूरी तरह  
तहस-नहस कर डाला।



और कोजुम-कोजा पृथ्वी के नक्शे  
से पूरी तरह गायब हो गया। उनकी  
सारी चीजें भी बाढ़ से बने समुद्र में  
समा गईं।

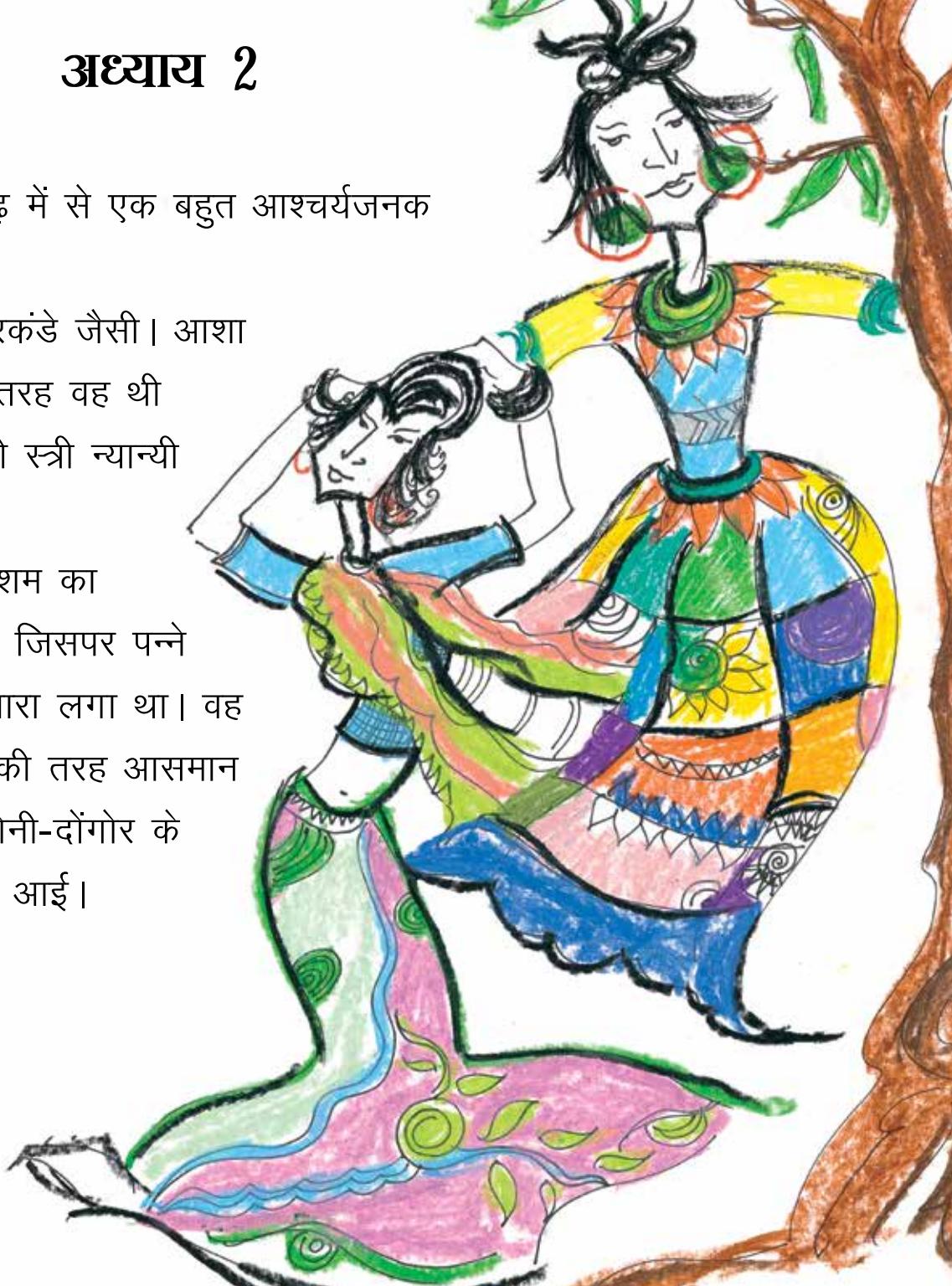


## अध्याय 2



लेकिन उस बाढ़ में से एक बहुत आश्चर्यजनक  
चीज़ निकली ।

एक मात्र सरकंडे जैसी । आशा  
की किरण की तरह वह थी  
म्येते परिवार की स्त्री न्यान्यी  
म्येते ।



वह सुन्दर रेशम का  
लहँगा पहने थी जिसपर पन्ने  
के रंग का किनारा लगा था । वह  
स्वर्ग की रानी की तरह आसमान  
से तैरती हुई दोनी-दोंगोर के  
परिवार में उतर आई ।



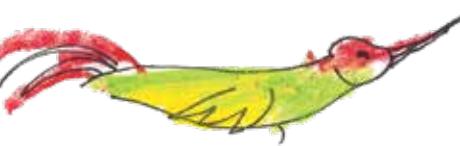
वहाँ आकर उसने उस महायुद्ध की  
कहानी सुनाई। और बताया कि किस  
प्रकार कोजुम-कोजा के लोग अपना सब  
कुछ अपनी जान तक गँवा चुके हैं।  
उसने बताया कि यह सब इसलिए हुआ  
कि धरती के लोग खुश रह सकें।

न्यान्यी म्येते जिससे भी मिलती  
सभी को वह बहुत सुन्दर तथा रनेह  
करनेवाली स्त्री लगती थी। उसने दोनी-  
दोंगोर लोगों के जीवन में प्रसन्नता तथा  
खुशहाली भर दी।

न्यान्यी म्येते! उसके 'मेझंग गा-ले'  
दोनी-दोंगोर के हरे-हरे पेड़ बन गए।

उसके हरे किनारे वाले लहँगे ने पौधों  
का रूप ले लिया।



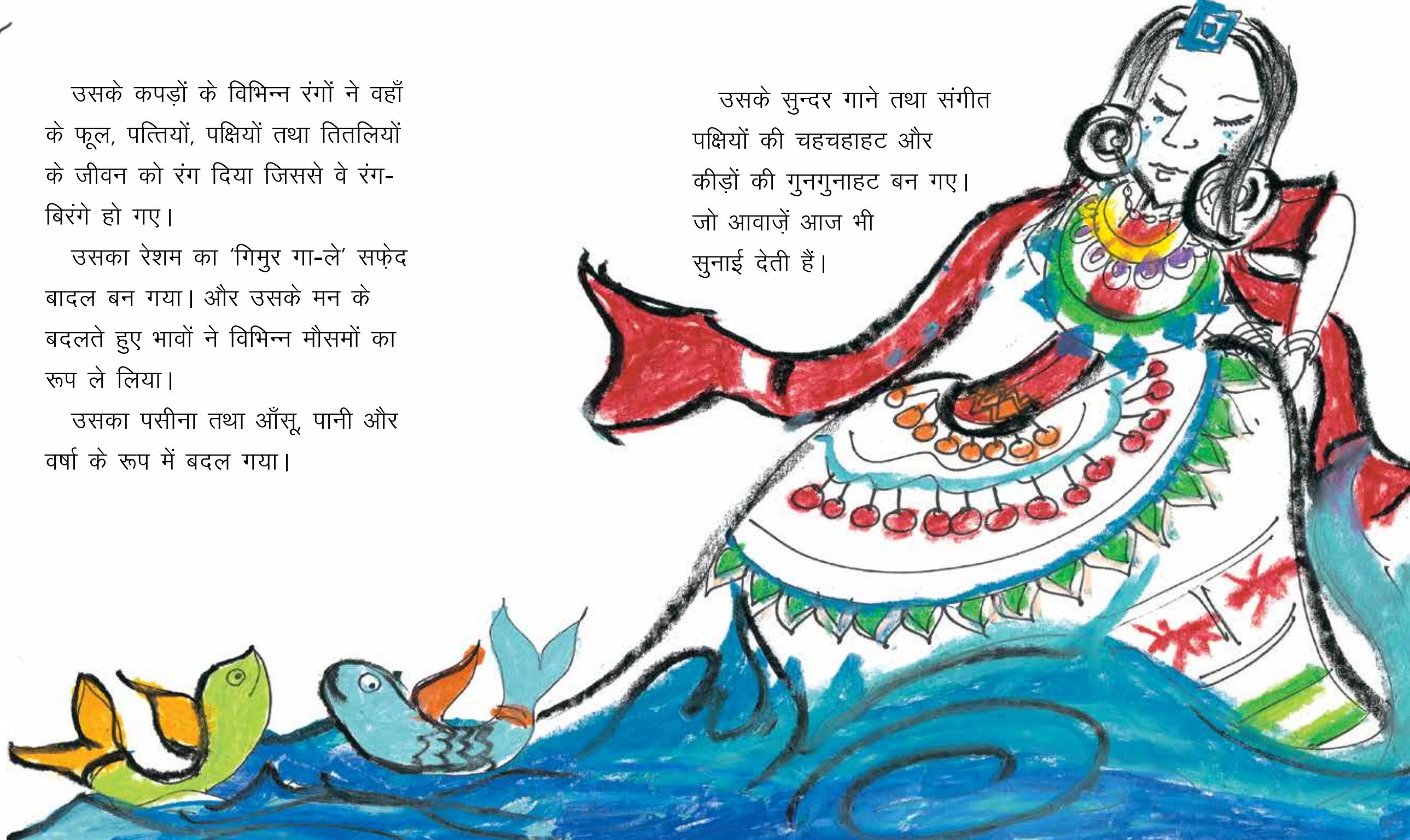


उसके कपड़ों के विभिन्न रंगों ने वहाँ  
के फूल, पत्तियों, पक्षियों तथा तितलियों  
के जीवन को रंग दिया जिससे वे रंग-  
बिरंगे हो गए।

उसका रेशम का 'गिमुर गा-ले' सफेद  
बादल बन गया। और उसके मन के  
बदलते हुए भावों ने विभिन्न मौसमों का  
रूप ले लिया।

उसका परीना तथा आँसू पानी और  
वर्षा के रूप में बदल गया।

उसके सुन्दर गाने तथा संगीत  
पक्षियों की चहचहाहट और  
कीड़ों की गुनगुनाहट बन गए।  
जो आवाजें आज भी  
सुनाई देती हैं।



दोनी-दोंगोर लोग उसे बहुत  
प्यार करते थे और गाँव  
में जो कुछ भी होता सब में  
वह शामिल रहती ।



जो लोग भी न्यान्यी-म्येते से  
मिलने आते उन सबका वह बहुत  
ध्यान रखती । वह बहुत प्यार करने  
वाली, खुश रहने वाली और हँसी  
से इतनी भरपूर थी कि सभी लोग  
उसके अपनेपन और अच्छाई को  
महसूस करते थे । वे खुद को भी  
हँसी के फव्वारे की तरह आनंद से  
भरपूर महसूस करते ।





न्यान्यी म्येते सभी के प्रति बहुत दया रखती थी – पक्षी,  
पशु, पेड़ या फिर मनुष्य। उसने लोगों को हँसाया,  
नचाया और उनके साथ अच्छा समय बिताया।

परन्तु उसने कभी भी लोगों को यह नहीं भूलने दिया  
कि वह कोजुम-कोजा देश से आई थी जो उस विशाल  
बाढ़ में बह गया था।

उसी के कारण हर कोई याद रखेगा कि कभी कोजुम-कोजा नाम का  
देश हुआ करता था! उनके नाच-गाने, उनके उत्सव तथा उनकी  
खुशियाँ सभी कुछ।

इसीलिए 'आदि' लोग न्यान्यी म्येते उत्सव आज भी मनाते हैं।  
वे उस सुन्दर स्त्री को याद करते हैं जो अनन्त आसमान एक  
दिन तैर कर आई थी। उसके द्वारा सुनाई गई कहानियाँ  
वहाँ के लोग आपको भी सुनाएँगे।



कोजुम-कोजा की उन्निंग अरान एक 'आदि' उत्सव है जो गुमिन  
सोयिन के सम्मान में मनाया जाता है। गुमिन सोयिन मनुष्य  
जाति को बचानेवाले हैं। वे खुशहाल तथा सौभाग्यशाली जीवन  
का आशीर्वाद देते हैं। इसी दिन हर वर्ष आदि लोग न्यान्यी-म्येते  
का दिन मनाते हैं। यदि आप अरुणाचल प्रदेश जा रहे हों तो  
उत्सव में अवश्य उपस्थित रहें, भूलें नहीं!

# अनमोल कहानियाँ भारत के उत्तरपूर्व से!



भारत के उत्तरपूर्वी राज्य हैं प्राचीन संस्कृति एवं विविधता से ओतप्रोत! समृद्ध हरियाली की चादर में  
लिपटे इस क्षेत्र के हरेक राज्य की अपनी एक अलग सभ्यता, एक अलग परम्परा है। जादुई सौन्दर्य  
से सजी, यह जगह घर है 300 से अधिक जनजातियों एवं भाषाई समुदायों का।  
तो आईए जानें भारत के मनमोहक उत्तरपूर्व को इसकी कहानियों द्वारा!

**ममंग दईः** एक पत्रकार हैं। उन्होंने भारत तथा विदेशों का काफी भ्रमण किया हैं। वे 'नार्थ ईस्ट राइटर्ज फ़ोरम' की सदस्या हैं। उनकी कई कविताएँ तथा लघु कथाएँ कई पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। उनके प्रचलित कार्यों में अरुणाचल प्रदेशः द हिडेन लैंड एंड रीवर पोयमज़ उल्लेखनीय हैं।

**स्त्रीवी:** एक लेखिका तथा 'विज्वलाइज़र' हैं। मद्रास विश्व विद्यालय से उन्होंने 'फ़ाइन आर्ट' में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। आजकल वे एक छात्रावास पाठशाला में कार्यरत हैं। वे अपनी कई कलाप्रदर्शनियाँ लगा चुकी हैं। उन्होंने नृत्य में भी प्रशिक्षण लिया है।

## कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर-लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है। "भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!"

— नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में रखायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।"

— पेपरटाइगर्स  
"बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।"

— ठाइम आउट  
"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

— चार्ल्स लैंड्री, द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग



हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 2005, 2021

मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © ममग दई

चित्रांकन कृति स्वामित्व © कथा

स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुस्तक प्रयोग किति के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

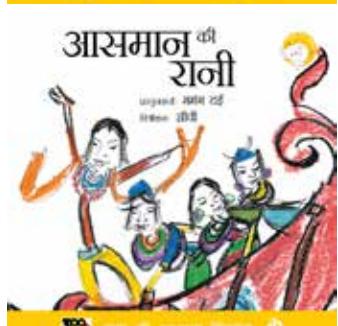
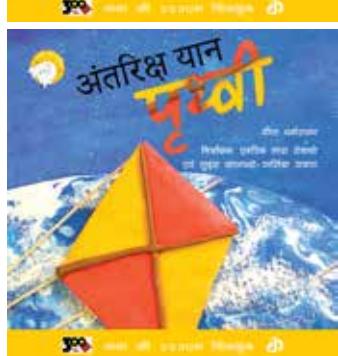
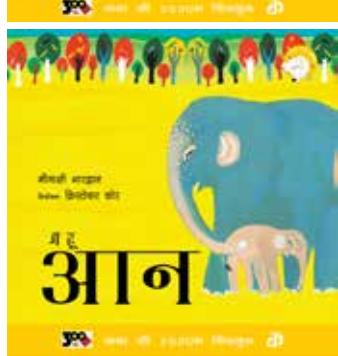
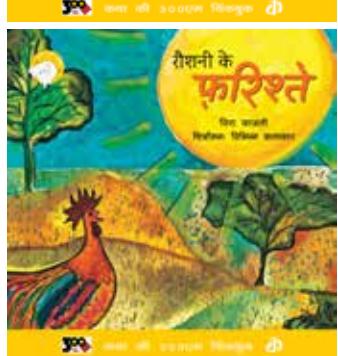
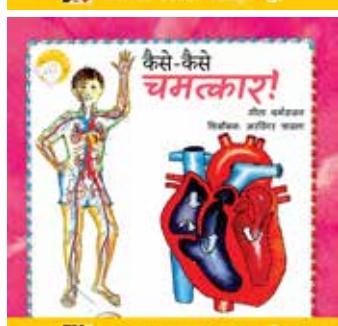
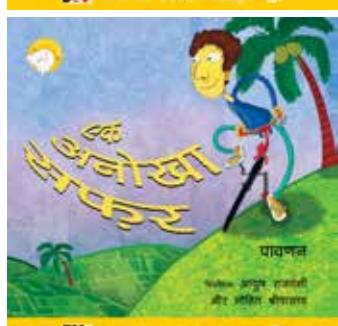
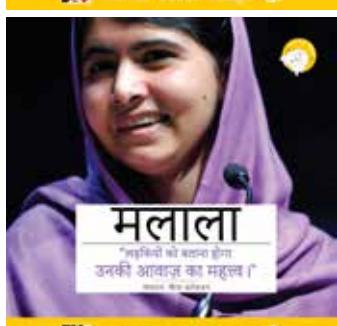
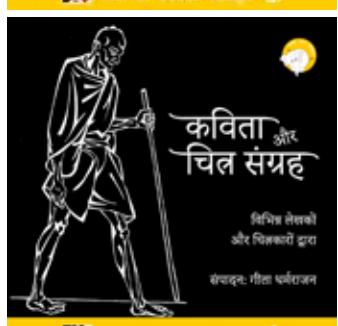
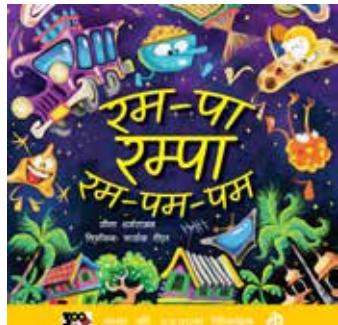
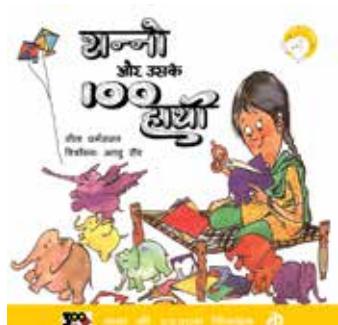
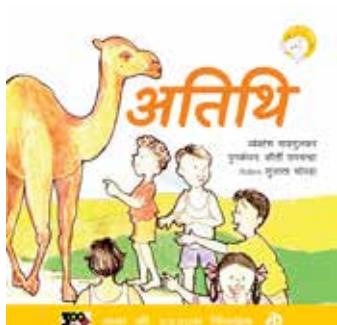
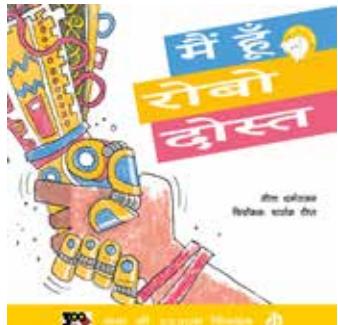
नयी दिल्ली द्वारा मुश्तित

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।  
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।



आनंद और समझने के लिए पढ़ो

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं



FOR OUR BOOKS

[www.books.katha.org](http://www.books.katha.org)

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children  
ISBN-978-93-88284-81-3  
  
9 789388 284813 [www.katha.org](http://www.katha.org)  
₹ xxx

इसकी  
जीवन

जीवन

जीवन

जीवन